



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

दोनों के मास्टर्स

समाचार पत्र का नाम.....
दिनांक .२२.१०.२०२० पृष्ठ संख्या.....७ कॉलम.....३-६

उपलब्धि • पराली प्रबंधन को लेकर एचएयू के वैज्ञानिकों का रिचर्स एचएयू: अत्याधुनिक रीपर तैयार, गेहूं के साथ धान की फसल में भी आएगा काम

महबूब अली | हिसार

पराली प्रबंधन को लेकर प्रदेशभर के किसानों को जागरूक किया जा रहा है। बावजूद इसके कुछ किसान पराली जलाने से बाज नहीं आ रहे। एचएयू हिसार के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के वैज्ञानिकों ने दो साल की रिसर्च के बाद अत्याधुनिक विशेष प्रकार का रीपर तैयार किया है। जिसके माध्यम से धान के साथ-साथ गेहूं की भी कटाई हो सकेगी। यहाँ नहीं एक घंटे में एक एकड़ से अधिक फसल का प्रबंधन किया जा सकेगा।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि पराली प्रबंधन की दिशा में एचएयू कई तरह की रिसर्च कर रहा है। इसके अलावा कृषि यंत्र बनाने की दिशा में भी काम किया जा रहा है। विवि के वैज्ञानिकों ने विशेष प्रकार का रीपर तैयार किया है। जो पूरी तरह से अत्याधुनिक है।

अत्याधुनिक रीपर में ब्लेंड की संख्या अधिक करने से लेकर यवकर भी बढ़ाएः इसकी खासियत यह है कि इसमें अन्य रीपर की अपेक्षा ब्लेंड की संख्या बढ़ा दी गई है। इसके अलावा स्पीड भी अन्य से तेज़ रहेगी। इस और ब्लोवर जो पराली को बाहर फेंकता है, उसके बीच पराली न फंसे इसके लिए रोटर लगाया गया है। रोटर पराली को आगे पास करता रहता है।



एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया रीपर।

जल्द ही एचएयू में स्थापित एग्री बायो वेस्ट मैनेजर सिस्टम को भी किया जाएगा शुरू

कुलपति ने बताया कि पराली प्रबंधन के लिए एचएयू में करीब छह करोड़ की लागत से एग्री बायो वेस्ट मैनेजर्मेंट सिस्टम लगाया है। जिसका निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है। इसके माध्यम से जहां बायो गैस बनाई जा सकेगी। वहाँ पराली के माध्यम से बिजली भी बनेगी। जल्द मैनेजर्मेंट सिस्टम को शुरू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि पराली प्रबंधन की दिशा में एचएयू व भी कई कार्य कर रहा है।

फंसने की भी संभावना नहीं रहती है। इसमें दो के बाजाएं एक ब्लोवर लगाया गया है। जिसके माध्यम से जल्दी पराली प्रबंधन करने में मदद

करीब साढ़े तीन लाख रुपए में किसानों को मिल सकेगा रीपर

एचएयू के वैज्ञानिकों का कहना है कि करीब साढ़े तीन लाख रुपए में रीपर किसानों को मिल सकेगा। रीपर को बाजार में उतारने के लिए कपंनियों से बात चल रही है। डील फाइनल होते ही रीपर को बाजार में उतार दिया जाएगा। किसानों को भी रीपर के इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी जाएगी। प्रयास रहेगा कि किसी को ट्रेनिंग देकर रीपर का प्रयोग सिखाया जाए।

मिलेगी। इसकी एक ब खासियत है देगा। इसके लिए रीपर को उसी के अनुसार करना होगा। कुलपति कि यदि पराली को खेत में डालना है तो खेत और ट्रॉली के अंदर ही का कहना है कि रीपर के प्रयोग से किसानों का खर्च भी बचेगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... १११५ माहेन्द्र, साप्तर ३५।।।।
दिनांक २२.१०.२०२० पृष्ठ संख्या..... ।..... कॉलम..... ७.६.....

एचएयूः फसल अवशेष प्रबंधन के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण हुआ शुरू

हिसार | विसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन कर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएं व जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाएं। यह एचएयू की सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहा वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

फसल अवशेष प्रबंध की दी जानकारी

हिसार(ब्लूरो)। किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करें। इससे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कही।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.10.2020	--	--

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 21 अक्टूबर : किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करनें। इससे पर्यावरण को प्रदुषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक(बागवानी) डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान-गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम

से विविधिकरण करने बारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल)के सहायक वैज्ञानिक(सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतारी होती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल अवशेषों के जलने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन जैसी जहरीली गैसें निकलती हैं, जिनका मानव जीवन व पशु-पक्षियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	22.10.2020	—	--

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

■ एचएयू में फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करने। इससे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। वे विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थिएं को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ.

आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं बल्कि अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं। उन्होंने संस्थान द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलने वाले विभिन्न कौशल कार्यक्रमों की भी विस्तार से जानकारी दी।

फसल विविधिकरण से बताया अवशेषों का प्रबंधन

साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक (बागवानी) डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान-गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों

के माध्यम से विविधिकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) के सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतारी होती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
हैलो हिसार न्यूज

दिनांक
22.10.2020

पृष्ठ संख्या
--

कॉलम
--

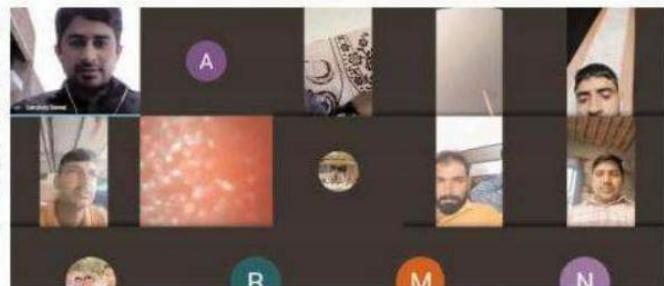
फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करनें। इससे पर्यावरण को प्रदुषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर

जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं। उन्होंने संस्थान द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलने वाले विभिन्न कौशल कार्यक्रमों की भी विस्तार से जानकारी दी।

एचएयू में फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू



फसल विविधिकरण से बताया अवशेषों का प्रबंधन

सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक(बागवानी) डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान-गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम से विविधिकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। खेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) के सहायक वैज्ञानिक(सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप

रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ाती होती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल अवशेषों के जलने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन जैसी जहरीली गैसें निकलती हैं।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	21.10.2020	--	--

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

हिसार। किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करनें। इससे पर्यावरण को प्रदुषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं बल्कि अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं। उन्होंने संस्थान द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलने वाले विभिन्न कौशल कार्यक्रमों की भी विस्तार से जानकारी दी। साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान-गेहूँ फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम से विविधिकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) के सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ातरी होती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल अवशेषों के जलने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ते वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन जैसी जहरीली गैसें निकलती हैं, जिनका मानव जीवन व पशु-पक्षियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सहायक वैज्ञानिक डॉ. अनिल सरोहा ने फसल अवशेषों के प्रबंधन में प्रयुक्त होने वाली मशीनों जैसे हैप्पी सीडर, जिरो टिलेज, रोटोवेटर, हे-रैक आदि के उपयोग की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.10.2020	--	--

कार्यक्रम एचएयू में फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करने, इससे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के महनिदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभांग अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं ब्रॉडकॉम अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं।

सहायक निदेशक(बागवानी) डॉ. सुनेद्र सिंह ने धान-गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम से विविधकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पढ़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल)के सहायक



हिसार। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वक्ता।

वैज्ञानिक(सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप गवल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में बताया। सहायक वैज्ञानिक (फार्म मशीनरी) डॉ. अनिल सरोहा ने फसल के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल

अवशेषों के जलने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। सहायक वैज्ञानिक (फार्म मशीनरी) डॉ. अनिल सरोहा ने फसल अवशेषों के प्रबंधन में प्रयुक्त होने वाली

मशीनों जैसे हैपी सीडर, जिरो टिलेज, रोटोवेटर, हेनैक आदि के उपयोग की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	21.10.2020	---	--

फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करें किसान : गोदारा

एचएयू में फसल अवशेष
प्रबंधन को लेकर तीन
दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करें। इससे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं बल्कि अन्य किसानों को भी इस बारे में



जागरूक करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं। उन्होंने संस्थान द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलने वाले विभिन्न कौशल कार्यक्रमों की भी विस्तार से जानकारी दी।

फसल विविधिकरण से बताया अवशेषों का प्रबंधन

साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक (बागवानी) डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान-गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम से विविधिकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू-जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) के

सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) डॉ. संदीप रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतारी होती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल अवशेषों के जलाने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन जैसी जहरीली गैसें निकलती हैं, जिनका मानव जीवन व पशु-पक्षियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सहायक वैज्ञानिक (फार्म मशीनरी) डॉ. अनिल सरोहा ने फसल अवशेषों के प्रबंधन में प्रयुक्त होने वाली मशीनों जैसे हैप्पी सीडर, जिरो टिलेज, रोटोवेटर, हे-रैक आदि के उपयोग की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

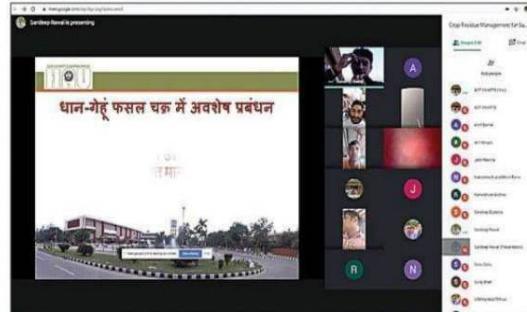
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	21.10.2020	--	--

एचएयू में फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उसके उचित प्रबंधन की दी जानकारी

पांच बजे न्यूज

हिसार। किसान फसलों के अवशेषों को जलाने की बजाय उत्का उचित प्रबंधन करने। इससे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन को उचित शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के समयन नेहवाल कृषि प्रशिक्षणीकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-नियंत्रक डॉ. अशक्तु कुमार गोदान ने कहे। वे 'फसल अवशेष प्रबंधन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभाभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तर शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मानदंडों व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल स्वयं बल्कि अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक



जानकारी दी।

फसल विविधिकरण से बताया अवशेषों का प्रबंधन साधन नेहवाल कृषि प्रशिक्षणीकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक(बायावानी) डॉ. सुरेन्द्र सिंह ने धन-गेहूँ फसल चक्र में दृष्टिकोण के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मोरेन जैसी जरीरोती में से निकलती है, जिनका मानव जीवन व पशु-पक्षियों पर बहु प्रभाव पड़ता है। सहायक वेतानिक (फार्म मरीनो) डॉ. अमित सरदाहा ने फसल अवशेषों के प्रबंधन में प्रयुक्त होने वाली मरीनों जैसे हैप्पी सैंडर, जिंटिलेज, एटोबेटर, हैं-रैक आदि के प्रयोग की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलाने वाले जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों

उक्सान के बारे में बताए। उन्होंने संस्थान

विभिन्न काशल कार्यक्रमों की भी विस्तार से

के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	21.10.2020	--	--

फसल अवशेष के उचित प्रबंधन से जमीन की ताकत बढ़ाएँ : गोदारा

हिसार/21 अक्टूबर/रिपोर्टर

किसान फसलों के अवशेष को जलाने की बजाय उनका उचित प्रबंधन करें तो पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है और जमीन की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकते हैं। यह बात हकूमि के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह.निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने कहे। वे फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण के शुभारंभ पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वे न केवल स्वयं बल्कि अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करें और फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताएं।

उन्होंने संस्थान द्वारा बेरोजगार युवाओं के लिए चलने वाले विभिन्न कौशल कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। संस्थान के सहायक निदेशक बागवानी डॉ. सुरेंद्र सिंह ने धान.गेहू फसल चक्र में बागवानी फसलों के माध्यम से विविधिकरण करने वारे बताया ताकि फसल अवशेष को जलाना न पड़े और गिरते भू.जलस्तर को रोका जा सके। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी के सहायक वैज्ञानिक सस्य विज्ञान डॉ. संदीप रावल ने फसल अवशेष प्रबंधन के तरीकों की जानकारी देते हुए इसके जलाने के दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को जमीन में दबाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ाती है और फसल अवशेषों में जो पोषक तत्व होते हैं वे जमीन को उपलब्ध हो जाते हैं। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. संदीप भाकर ने फसल अवशेषों के जलने से मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण व जमीन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि अवशेष जलाने से कार्बनडाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, मीथेन जैसी जहरीली गैसें निकलती हैं, जिनका मानव जीवन व पशु.पक्षियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सहायक वैज्ञानिक फॉर्म मशीनरी डॉ. अनिल सरोहा ने फसल अवशेषों के प्रबंधन में प्रयुक्त होने वाली मशीनों जैसे हैप्पी सीडर, जीरो टिलेज, रोटोवेटर, हे.रैक आदि के उपयोग की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	21.10.2020	--	--

आगामी चार दिनों में मौसम रहेगा परिवर्तनशील, बढ़ सकती है ठंड

समस्त हरियाणा न्यूज हिसार। हरियाणा कृषि संभावना है। हवा में 30 से 70 विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग के अनुसार आगामी चार दिनों तक मौसम परिवर्तनशील व खुशक रहने व तापमान में गिरावट की संभावना है। आगामी 21 अक्टूबर से अक्टूबर तक सलाह दी है कि वे आगामी चार अधिकतम तापमान 32.0 डिग्री दिनों तक मौसम खुशक रहने व सेल्सियस से 36 डिग्री सेल्सियस तापमान में गिरावट को ध्यान में रहने तथा न्यूनतम पारा 13 से 16

डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की लिए खेत की जुताई कर तैयार कर लें। खेतों में उचित नमी होने पर सरसों की बिजाई कर लें। साथ ही खाली खेतों में जुताई कर चने के लिए तैयार कर लें। खुशक मौसम की संभावना को देखते हुए नरमा व कपास की चुगाई जल्दी से जल्दी कर लें। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों का आह्वान किया कि पराली की कटाई के बाद उसमें आग न लगाएं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दिनांक २२.१०.२०२० पृष्ठ संख्या..... ९ कॉलम..... ३-४

एविगर तक गिरेगा पारा

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग के अनुसार आगामी चार दिनों तक मौसम परिवर्तनशील तथा खुशक रहने व तापमान में गिरावट की संभावना है। आगामी 21 अक्टूबर से अधिकतम तापमान 32.0 डिग्री सेल्सियस से 36 डिग्री सेल्सियस रहने तथा व्यूजतम पारा 13 से 16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। हवा में 30 से 70 प्रतिशत आद्रता की संभावना है। इस दौरान 5 से 8 किलोमीटर प्रति घंटा के मध्य उत्तर पश्चिमी हवाएं चलने की उम्मीद है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी है कि वे आगामी चार दिनों तक मौसम खुशक रहने व तापमान में गिरावट को ध्यान में रखते हुए रबी फसलों की बिजाई के लिए खेत की जुताई कर तैयार कर लें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २२/१०/२०२० पृष्ठ संख्या..... १ कॉलम..... १-२

एचएयू एससी-एसटी कर्मचारी यूनियन के प्रधान बने राजेश ग्रेवाल, राजकुमार गंगवानी महासचिव

हिसार | एचएयू अनुसूचित जाति जनजाति कर्मचारी संघ की सभा बुधवार को राजबीर सिंह नाफरिया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग करते हुए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें राजेश ग्रेवाल को प्रधान चयनित किया गया। राजकुमार गंगवानी को महासचिव मनोनीत किया गया। इससे पूर्व आमसभा में नई कार्यकारिणी के लिए एक 7 सदस्यों की कमेटी बनाई गई, जिसमें कृष्ण लाल नूनिया, राजकुमार गंगवानी, सुनील कुमार, अर्जुन राठी, नरेश कुमार, श्रवण कुमार सहित अन्य को सदस्य बनाते हुए नई कार्यकारिणी के चयन के लिए अधिकृत किया गया।

ग्रेवाल बने एच.ए.यू.एस.सी./एस.टी. कर्मचारी यूनियन के प्रधान

हिसार, 21 अक्टूबर (ब्यूरो):
एच.ए.यू.अनुसूचित जाति जनजाति कर्मचारी संघ की आम सभा बुधवार को राजबीर सिंह नाफरिया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग करते हुए कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें राजेश ग्रेवाल को प्रधान चयनित किया गया। इसके अलावा राजकुमार गंगवानी को महासचिव मनोनीत किया गया।

राजेश ग्रेवाल बने एचएयू एससी एसटी कर्मचारी यूनियन के प्रधान

हिसार : हरियाणा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी अनुसूचित जाति जनजाति कर्मचारी संघ की बैठक बुधवार को राजबीर सिंह नाफरिया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग करते हुए नई गठित की गई। राजेश ग्रेवाल प्रधान चुने गए। राजकुमार गंगवानी को महासचिव मनोनीत किया गया। (जारी)